इतिहास में वस्तुनिष्ठता

मनीषा

प्रस्तावना

वस्तुनिष्ठता आधुनिक वैज्ञानिक विद्या की विशेषता है। इसका अभिप्राय यह है कि कोई वैज्ञानिक समुचित विधि तथा नियमों के आधार पर प्रयोगशाला में सिद्ध करता है तो उस गवेषणा को सभी वैज्ञानिक स्वीकार करेगें। जैसेः लोहा, पानी, पारा आदि के सम्बन्ध में सार्वभौमिक तथा सर्वकालिक है। इन वस्तुओं से संबंधित निष्कर्ष के विषय में विभिन्न मत नहीं हो सकते। अधिकांश इतिहासकारों ने इतिहास को विज्ञान स्वीकार किया है।[1] वैज्ञानिक विद्या में निष्ठावान इतिहासकारों की अवधारणा है कि वे इतिहास के स्वरूप के निष्कर्ष को सार्वभौमिक तथा सर्वकालीन बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं। यदि इतिहास को पूर्णतया विज्ञान स्वीकार कर लिया जाये तो इसमें वस्तुनिष्ठा अपेक्षित है।

परन्तु वैज्ञानिक विधा में निष्ठावान इतिहासकारों के प्रयासों के बावजूद ऐतिहासिक निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ नहीं बन पाया। क्योंकि इतिहास मानवीय उपलब्धियों का विवरण है। मानवीय क्रिया.कलापों के सम्बन्ध में सभी का एकमत होना सम्भव नहीं है। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की अपनी समस्याऐं हैं।

वस्तुनिष्ठता का अर्थ और स्वरूप

इतिहास में वस्तुनिष्ठता एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल है. लेकिन वस्तुनिष्ठता है क्या? वस्तुनिष्ठता का मतलब है कि इतिहासकार अतीत का वर्णन तटस्थ भाव से पूरी तरह उदासीन होकर, अपने परिवेश, विचारधारा, वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित हुये बगैर करे। यह अपने आप में एक अहम् सवाल है कि क्या इतिहासकार अतीत के क्रिया.कलापों का इस तरह पूरी निष्पक्षता से वर्णन कर सकता है या नहीं? प्रायरू विद्वान विज्ञान तथा इतिहास में फर्क करते हैं।[2] इतिहास इस रूप में भौतिक विज्ञानों से अलग है कि विज्ञान में पर्यवेक्षक या मानवीय कर्त्ता अपने अध्ययन के विषय से अलग होता है लेकिन मानवीय विज्ञानों में कर्त्ता तथा विषय.वस्तु जिसका यह कर्त्ता अध्ययन करता है, एक ही वर्ग के हैं, उनकी प्रकृति एक जैसी होती है, यानि

इतिहासकार स्वयं भी मनुष्य है तथा अपने परिवेश से प्रभावित होता रहता है और उसके अध्ययन की विषय.वस्तु भी अतीत के मनुष्यों के क्रिया.कलापों, विचार या उनके परिवेश में रहती है। इतिहासकार और अतीत के मनुष्य एक ही तरह के प्राणियों की प्रजातियां हैं। इतिहासकार जैविक.वैज्ञानिकों की तरह मनुष्यों की भौतिक संरचना या शरीर की आंतरिक संरचना का ही अध्ययन नहीं करता है, जिनमें मानवीय इच्छा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

समाजशास्त्री और इतिहासकार यह जानने की कोशिश करते हैं कि एक खास परिवेश में इन्सान जो करते हैं, वह किन इच्छाओं से प्रेरित होकर वह वैसा करते हैं, क्योंकि मानवीय जीवन के जिन रूपों को वह अध्ययन करते हैं, उनमें उनकी इच्छा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मानवीय इच्छा का चयन अलग.अलग मनुष्य अलग.अलग तरीके से करते हैं। एक ही प्रकार के हालातों में अलग.अलग मनुष्य अलग.अलग तरह की प्रतिक्रिया दर्शाते हैं जैसे. कोई शारीरिक खतरा मौजूद हो तो कुछ इन्सान अत्यन्त बहादुरी से पेश आते हैं, कुछ देखते हैं कि दूसरे कैसी प्रतिक्रिया करेंगें और कुछ बिल्कुल कायरता से पेश आयेंगे। यह एक साधारण सा उदाहरण हमने यहां दिया है लेकिन मानवीय जीवन में, जटिल परिवेश में, प्रतिक्रियाओं के अनेक रूप हमें देखने को मिल सकते हैं।[3] हमारे कहने का मतलब यही है कि समाज.शास्त्रों में पर्यवेक्षक तथा अध्ययन किये जाने वाले मानवीय क्रिया. कलापों के बीच एक खास तरह का रिश्ता है जो प्राकृतिक विज्ञान से बिल्कुल ही अलग तरह का है। अतीत का अध्ययन करते हुए भी इतिहासकार, इतिहास विषय की इस खासियत की वजह से, अपने स्वयं के कुछ नजरिये लेकर ही कोई भी ऐतिहासिक घटना का पर्यवेक्षण करता है।[4]

अतरू वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह है कि हम बिना किसी भेदभाव के इतिहास लिखें। इतिहास लेखन में कहीं भी हमारी सोच या अन्य दबाव नहीं होना चाहिए। इतिहासकार द्वारा यथास्थिति और यथार्थपूर्ण वर्णन किया जाना ही वस्तुनिष्ठता कहलाता है।

प्रो. गैरी के अनुसार," वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह है कि हम बिना किसी भेदभाव के इतिहास लिखें। इतिहास लेखन में कहीं भी हमारी सोच या अन्य दबाव नहीं होना चाहिए।"[5]

डब्लू. एच. वाल्श के अनुसार, "किसी भी समस्या को सभी के स्वीकार करने योग्य ढंग से हल करना ही वस्तुनिष्ठता है।"

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्याएँ

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्याएं जटिल एवं गम्भीर हैं। उनके समाधान के पश्चात् ही ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता से सम्बन्धित वैज्ञानिक इतिहासकारों के प्रयासों को मान्यता दी जा सकती है।

1. विशेष दृष्टिकोण

इतिहासकार अतीत का चित्रण किसी विशेष दृष्टिकोण, अवधारणा, संस्कार, व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष तथा भ्रान्ति के परिवेश में करता है। कार्ल मार्क्स, स्पेंगलर, कार्ल मेनहीम ने विशेष दृष्टिकोण से अतीत कालीन घटनाओं की व्यवस्था की है।[6]

प्रो. वाल्श ने स्पष्ट किया है कि, "इतिहास का अध्ययन दृष्टि विशेष से करना चाहिए।"

अतरू इतिहास अध्ययन में दृष्टि विशेष को प्रधानता दी जाएगी तो ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की कल्पना व्यर्थ है।

2. काल विशेष

कार्ल बेकर के अनुसार इतिहास अतीतकालिक घटनाओं का सर्वांगीण विवरण है, परन्तु अतीत की घटनाओं का वर्णन प्रत्येक युग का इतिहासकार समान रूप से प्रस्तुत नहीं करता। प्रत्येक पीढ़ी का इतिहासकार अपने युग की आवश्यकतानुसार इतिहास लिखता है। दास.प्रथा किसी युग की सामाजिक आवश्यकता थी और वर्तमान में सामाजिक अभिशाप। इतिहास का स्वरूप प्रत्येक युग में परिवर्तनशील रहा है। अतरू इतिहास में वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की कल्पना एक स्वप्न है।[7]

3. सामाजिक प्राणी

मनुष्य सामाजिक प्राणी है तथा संस्कारों से जुड़ा हुआ है। इतिहासकार का भी जन्म, पालन.पोषण तथा विकास समाज, संस्कार तथा धार्मिक परिवेश में होता है। इतिहासकार पर समाज, संस्कार तथा धर्म का प्रभाव स्वाभाविक है। अतरू कोई भी इतिहासकार अपने को इन प्रभावों से मुक्त नहीं कर पाता है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार, "वैज्ञानिक विधा में आस्थावान इतिहासकारों को समाज से बाहर एतिहासिक वस्तुनिष्ठता ढूँढ़नी चाहिए।"[8]

मार्क्स का यह कथन यथार्थ प्रतीत होता है। संस्कार और सामाजिक वातावरण के कारण ही बहुत से इतिहासकारों में तीव्र विरोध है।

4. मान्यताएँ

इतिहास में किंवदन्तियाँ किसी युग में प्रामाणिक तथा मान्य थीं, किन्तु अब वे मानव इतिहास की उपेक्षित वस्तु.सामग्री बन गयी है। उसी प्रकार वर्तमानकालिक एतिहासिक प्रामाणिकता तथा मान्य तथ्य भविष्य में उपेक्षित हो जाएंगे। एसी परिस्थिति में एतिहासिक वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की तुलना में सार्वभौमिक तथा सर्वयुगीन नहीं हो सकती।

5. सामाजिक आवश्यकता

किसी भी युग की सामाजिक आवश्यकता इतिहासकारों के दृष्टिकोण को सदैव प्रभावित करती है। **एडवर्ड मेयर** ने तो इतिहास.लेखन में समसामयिक सामाजिक आवश्यकता को प्रधान माना है।[9] जब महान दार्शनिक क्रोचे ने सभी इतिहास को समसामयिक कहा तो उसका अभिप्राय इतिहास.लेखन में समसामयिक सामाजिक आवश्यकता को प्रधानता देना था। क्रोचे ने स्पष्ट कहा है कि, "मनुष्य की आत्मा निरन्तर संवेदनशील होनी चाहिए।" गार्डिनर के अनुसार, " सामाजिक आवश्यकता का कोई माप नहीं है।"[10] एक ही एतिहासिक तथ्य की उपयोगिता विभिन्न गुणों में बदलती रहती है। मानव जीवन की रूचियां तथा निहित स्वार्थ का स्वरूप प्रत्येक युग में बदलता रहा है। उसमें समता एवं एकरूपता की आशा करना एक भूल है। एक युग का इतिहास दूसरे युग के इतिहास से भिन्न होता है और इतिहास में विभिन्नता अवश्यंभावी है।

6. व्यक्तिगत अभिरूचि

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक जटिल समस्या है। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक असंभव कल्पना है। कोई भी रचना लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। हैजलिट ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है और कहा है, "कला, अभिरूचि, जीवन तथा वाणी में व्यक्ति की भावना निर्णायक होती है, तर्क नहीं। इतिहासकार की रचना भावप्रधान होती है, तर्कप्रधान नहीं।"[11]

7. पूर्वाग्रही होना

ओकशाट के अनुसार, "इतिहासकार का पूर्वाग्रही होना स्वाभाविक है।" 17वीं सदी में अर्मेनियस के दमन का वर्णन करते हुए कोई भी इतिहासकार अपनी सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं को रोक नहीं सका। इतिहासकार का पक्षपात अतीतकालिक दो वर्गों के संघर्ष का समझने तथा उचित मूल्यांकन की शक्ति प्रदान करता है। मातृभूमि के प्रति स्नेह तथा निष्ठा का परित्याग कोई भी इतिहासकार नहीं कर सकता। साम्राज्यवादी ब्रिटिश इतिहासकारों ने सन् 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को सैनिक विद्रोह कहा है, जबकि भारतीय इतिहासकार उसे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहते हैं।"[12]

8. तथ्य चयन में भिन्नता ;विचारों में मतभेदद्ध

इतिहास का क्षेत्र काफी विशाल है। इसलिए अतीत का सर्वांगीण चित्रण प्रस्तुत करना इतिहासकार के सार्मथ्य से बाहर है। प्रायरू इतिहासकार अतीत के किसी एक पक्ष का ही वर्णन करता है। अतीत का विस्तृत क्षेत्र इतिहासकार को किसी एक पक्ष के मनचाहे चयन के लिए विवश करता है। पूर्वाग्रही होने के कारण इतिहासकार अलग.अलग तरीके से विचार देते हैं।

गियासुद्दीन तुगलक की आक्समिक मृत्यु के बारे में डॉ. ईश्वरी प्रसाद ने माना है कि यह राजकुमार उलुग खां के सुनियोजित षड़यन्त्र का परिणाम थी परन्तु डॉ. मेंहदी हसन ने उलुग खां को निर्दोष मानते हुए कहा है कि अचानक बिजली गिरने के कारण गियासुद्दीन तुगलक की आक्समिक मृत्यु हुई थी।[13]

9. धर्म व जाति से प्रभावित

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता में धर्म व जाति भी कठिनाई उत्पन्न करते हैं। इतिहासकार अपने को धार्मिक तथा जातिगत आग्रहों से मुक्त नहीं कर पाता। मध्ययुगीन भारतीय इतिहास में इतिहासकारों ने धर्म तथा जातिगत भावनाओं से प्रभावित होकर तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सर जादुनाथ सरकार ने औरंगजेब की धार्मिक नीति तथा मन्दिरों को ध्वस्त करने की कटु आलोचना की है, परन्तु फारूकी ने औरंगजेब की धार्मिक नीति तथा मन्दिरों के गिराने के औचित्य को सिद्ध किया है।

10. राजनीतिक दलों से प्रभावित

सभ्य समाज में रहने वाले मनुष्यों का सम्बन्ध विभिन्न राजनीतिक दलों से होता है जैसेरू. मार्क्सवाद, लिबरल्स, पूँजीवादी,

प्रजातंत्रवादी, राजतंत्रवादी, साम्यवादी आदि। इतिहासकार भी इन राजनीतिक दलों के सिद्धान्तों से प्रभावित होता है। वह अपनी दृष्टि से एतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करता है। ऐसे इतिहासकारों से वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा करना उचित प्रतीत नहीं होता। ऐसे इतिहासकारों की रचनाओं में ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का सर्वत्र दिखाई देता है।[14]

11. ऐतिहासिक न्याय

मैडलबाम के अनुसार, ''ऐतिहासिक न्याय मूल्यपरक होता है।'' अतरू इसे वस्तुनिष्ठ स्वीकार करना सम्भव नहीं है। जो इतिहासकार किसी घटना या व्यक्ति के बारे में नैतिक न्याय देता है उस इतिहासकार के इतिहास लेखन में ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का सर्वथा अभाव होता है।[15]

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता या उसको आपेक्षित करने के उपाय

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्याओं के सूक्ष्म विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास में वस्तुनिष्ठता एक जटिल समस्या है, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि इतिहास का स्वरूप वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में कुछ मूलभूत प्रश्न स्वभावतरू उठते हैं.

1. इतिहासकार से किस प्रकार की वस्तुनिष्ठा अपेक्षित है?
2. क्या इतिहास में विषयनिष्ठा तथा वस्तुनिष्ठा की गवेषणा आवश्यक है?
3. क्यों इतिहासकार तथा दार्शनिक ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को एक समस्या के रूप में देखते हैं?
4. क्या हम इस तथ्य को स्वीकार कर सकते हैं कि इतिहास विज्ञान की भांति वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता?

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता को सिद्ध करने के लिए इन मूलभूत प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देना आवश्यक प्रतीत होता है। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने के उपाय निम्नलिखित हैं.

1. इतिहासकार की व्यक्तिगत योग्यता

बटरफील्ड के अनुसार इतिहास में वस्तुनिष्ठता के समावेश से पहले सामान्य सामान्य इतिहास और खोजपुर्ण इतिहास के अन्तर को समझना चाहिए।[16]

i. सामान्य इतिहास

सामान्य इतिहास संक्षिप्त होता है, इतिहासकार अपनी व्यक्तिगत धारणाओं तथा भावनाओं से इसे अलंकृत नहीं कर सकता। अतरू सामान्य इतिहास वस्तुनिष्ठ हो सकता है।

ii. खोजपूर्ण इतिहास

खोजपूर्ण इतिहास में इतिहासकार मनोनुकूल तथ्यों का चयन कर व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूचि के अनुसार उनकी व्याख्या करता है। ऐतिहासिक प्रस्तुतीकरण में वस्तुनिष्ठता का प्रतिष्ठापन इतिहासकार की व्यक्तिगत योग्यता से ही वह चरितनायकों तथा घटनाओं का यथार्थ संबंध प्रस्तुत करता है। अतरू इतिहास में वस्तुनिष्ठता के समावेश के लिए इतिहासकार की व्यक्तिगत योग्यता पूर्ण अपेक्षित है।

2. तथ्यों को प्रधानता देनी चाहिए

इतिहासकार इतिहास लेखन के समय अपनी व्याख्या को साथ रखता है जो वस्तुनिष्ठा को हानि पहुँचाती है। इसलिए इतिहासकार को तथ्यों को प्रधानता देकर ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए। जी. एन. क्लार्क का अभिमत है कि यह नहीं भूलना चाहिए कि इतिहास की वस्तुसामग्री तथ्य होते हैं। विवाद के आवरण में छिपे हुए तथ्य अतीत सम्बन्धी ज्ञान के आधार हैं। अतरू ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के लिए यथार्थ तथ्यों का प्रस्तुतीकरण आवश्यक है।[17]

3. व्यक्तिगत रूचि का प्रयोग गलत है

कुछ इतिहासकारों ने इतिहास को अपने विचारों के प्रचार का माध्यम बनाया है। इन लोगों ने तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर द्वेष तथा व्यक्तिगत भावनाओं को प्रधानता दी है। ऐसे इतिहासकारों की सर्वत्र निन्दा होनी चाहिए। गार्डिनर के अनुसार, ''इतिहासकार को वस्तुनिष्ठा का परित्याग करके अपनी व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इतिहास को अतिरंजित नहीं करना चाहिए।'' इतिहास व्यक्तिगत विचारों के प्रचार का साधन नहीं है। जिन इतिहासकारों ने अतीत के पुनर्निर्माण को प्रचार का साधन स्वीकार किया है उन्हें इतिहासकारों की श्रेणी से बहिष्कृत करना चाहिए। उन्हें इतिहासकार की अपेक्षा प्रचारक कहना अधिक समाचीन है।[18]

4. इतिहासकार को व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष, घृणा से दूर रहना चाहिए

ऐतिहासिक घटनाओं के अभिनेता महापुरूष होते हैं। इतिहास उन्हीं के कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी है। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के लिए आवश्यक है कि उनके कार्यों का अध्ययन यथार्थरूप में किया जाए। इतिहासकार को अत्यधिक प्रशंसा तथा द्वेष की भावना से प्रभावित नहीं होना चाहिए। यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइडीज की विलयन के प्रति घृणा तथा एन. जी. वेल्स की सेनानायकों के प्रति घृणा की आलोचना सभी ने की है।

रेनियर ने कहा है कि वस्तुनिष्ठता में आस्थावान इतिहासकारों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इतिहास तथ्य प्रधान है, व्यक्ति प्रधान नहीं।

5. तथ्यों का चयनरू

इतिहासकार को तथ्यों के चयन की आवश्यकता नहीं है। इतिहास में एक तथ्य स्वयं दूसरे तथ्य का चयन करता है और इतिहासकार को उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है कोई भी इतिहासकार अपनी इच्छा से तथ्यों का चयन करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। ऐतिहासिक तथ्यों का स्वरूप वस्तुनिष्ठ होता है। इतिहासकार का कर्तव्य वस्तुनिष्ठता का निर्वाह करते हुए तथ्यों का आदर करना है।

इसलिए इतिहासकारको रहस्यवाद की उलझनों में न फंसकर, ऐतिहासिक स्त्रोतों में वर्णित तथ्यों को यथार्थ मानकर अतीत का उपयोगी चित्रण करना चाहिए।[19]

6. नैतिक न्याय से बचना चाहिएरू.

इतिहास में नैतिकता एक अंधविश्वास है। किसी घटना या व्यक्ति के संबंध में इतिहासकार का नैतिक न्याय देने का कार्य नहीं है। नैतिक न्याय के अधिकार को प्राप्त क रवह उस निरंकुश शासक की तरह बन जाएगा, जो दैवी अधिकार का दावा करेगा। वह अपनी इच्छा से दण्ड या क्षमादान देगा। बटरफील्ड ने उचित ही कहा है कि ''इतिहासकार न्यायधीश नहीं, बल्कि समाजसेवकों का सेवक है।'' सभी इतिहासकार इस बात से सहमत है कि नैतिक अधिकारों का परित्याग किया जाए। अतरू इस अवधारणा से ही इतिहासकार, इतिहास को वस्तुनिष्ठ बना सकता है।[20]

7. सिद्धान्तों का प्रभाव

ऐतिहासिक व्याख्या पर अनेक सिद्धान्तों का प्रभाव पड़ता है। साम्यवाद, पूंजीवाद, प्रजातन्त्रवाद, राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद तथा

मार्क्सवाद आदि सिद्धान्तों ने ऐतिहासिक व्याख्या तथा विश्लेषण को सर्वाधिक प्रभावित किया है।[21] वाल्श के अनुसार ऐतिहासिक व्याख्या के विभिन्न सिद्धान्त ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्या नहीं है।

8. इतिहासकार को ऐतिहासिक अनुशासन व अन्य नियमों का पालन करना चाहिए

वाल्श के अनुसार इतिहास का अपना अनुशासन तथा नियम है। इतिहासकार को ऐतिहासिक अनुशासन व नियमों का पालन करना चाहिए। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठ इतिहास अनुशासन का अंग है तथा निष्पक्षता इतिहास की आवश्यकता है। अनुशासित इतिहासकारों को ही इतिहास लिखना चाहिए। कुछ इतिहासकारों का विश्वास है कि मानवीय अनुशासन में इतनी स्वतंत्रता है कि उनका कथन मतभेद के बावजूद सत्य है तो ऐसे व्यक्तियों को इतिहास.समाज से निष्कासित करना चाहिए। इतिहास के वांछनीय नियमों की उपेक्षा करने का तात्पर्य इतिहास के स्वरूप को दूषित करना होगा।[22]

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरणों से यह सिद्ध होता है कि इतिहास की वस्तुनिष्ठता व अन्य विज्ञानों की वस्तुनिष्ठता में यह अन्तर है कि इतिहास की वस्तुनिष्ठता विज्ञान की वस्तुनिष्ठता के समान तर्क व सामान्यकरण पर आधारित नहीं होती क्योंकि इतिहास में वस्तुनिष्ठता वस्तुपरक के साथ.साथ मूल्यपरक भी होती है। इतिहासकार अपनी मानवीय विषय.वस्तु के विवेचन में अपने संस्कारों तथा अपनी तत्कालीन मूल्य संबंधी धारणा को नहीं छोड पाता। किन्तु फिर भी यदि इतिहासकार संस्कारों को यदि न छोड सकें तो भी उसे सत्य के आग्रह से ऊपर अवश्य उठाना पड़ता है। इतिहास में वस्तुनिष्ठता तभी प्राप्त हो सकती है जब यह अतीत और भविष्य के बीच एक सुस्पष्ट संबंध सेतु कायम कर लें। यह संबंध मूल्यों तथ्यों की परस्पर निर्भरता तथा क्रिया. प्रतिक्रिया के माध्यम ये ही उपलब्ध हो सकती है।

डॉ. पाण्डे ने अन्य विचारकों के मतों का उल्लेख करते हुए कहा है कि "डिल्थे के अनुसार घटनाओं को सन्दर्भ में रखना ही उनकी व्यख्या है। लार्ड एक्टन का मत था कि इतिहासकार को मानवीय कर्मों के सदसत् का निर्णय भी करना चाहिए। हीगल और कॉलिंगवुड के अनुसार मानवीय कर्मों के मूल में विचार ही होते हैं। अतरू ऐतिहासिक ज्ञान में तथ्यों के अनुसन्धान और व्याख्या में एक प्रक्रिया के दो पक्ष मानना चाहिए, जिसमें एक कल्पित सीमा शुद्ध वस्तु है और दूसरी कल्पित सीमा शुद्ध मूल्य है।[23]

अतरू संक्षेप में कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति असम्भव प्रतीत होती है, फिर भी प्रत्येक इतिहासकार का यह कर्तव्य है कि वह उन सभी नियमों का पालन करे जिसमें ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति हो सके। प्रत्येक इतिहासकार को अपनी रूचि, देशभक्ति, धर्म, जाति, संस्कृति, क्षेत्र, भय, दबाव, राजनीतिक दलों तथा सिद्धान्तों से दूर रहकर उनके साथ निष्पक्षता का व्यवहार करके इतिहास लेखन करना चाहिए। इस प्रकार का इतिहास लेख नही वस्तुनिष्ठ हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. झारखण्ड चौबे: "इतिहास दर्शन", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001
2. एच. सी. पांचाल : "इतिहास के सिद्धान्त एवं पद्धतियां", रिसर्च पब्लिकेशन, एच. एस. बघेला नई दिल्ली, 1997
3. ई. एच. कार : "इतिहास क्या है", मैकमिलन इण्डिया लि.,
4. नई दिल्ली, 1976
5. गोविन्द चन्द्र पाण्डे : "इतिहासरू स्वरूप एवं सिद्धान्त",
6. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2003
7. पी. गार्डिनर : "दि थ्योरी ऑफ हिस्ट्री", 1959,